International Journal of Applied Research 2018; 4(2): 103-104

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(2): 103-104
www.allresearchjournal.com
Received: 21-12-2017
Accepted: 22-01-2018

निखिल कुमार
शोध छात्र, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
निखिल कुमार
शोध छात्र, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

मेवाड़ में स्त्री शिक्षा

निखिल कुमार

20वीं शताब्दी में मेवाड़ राज्य सरकार शहरी स्तर पर उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के विकास हेतु प्रयत्नशील थी वहीं राज्य के नागरिकों के महत्वपूर्ण अंग स्त्रियों को भी आधुनिक शिक्षा की ओर प्रोत्साहित करने में व्यस्त थी। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में राज्य ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये थे।

1866 ई. में उदयपुर में प्रथम राजकीय शिक्षण संस्था की स्थापना से पूर्व मेवाड़ में स्त्रियों की शिक्षा पूर्णतः देशी शिक्षा–पद्धति पर आधारित थी। किन्तु देशी शिक्षा में भी कन्याओं की शिक्षा लड़कों की शिक्षा से भिन्नता लिये हुए थी। अर्थात् छात्राओं का छात्रों के समान पाठशाला, अस्थल, मठ, मकतब एवं मदरसों आदि शिक्षण संस्थाओं में जाकर ज्ञानार्जन का प्रचलन अत्यन्त सीमित था। यदि कुछ छात्रायें गुरु के पास अध्ययन हेतु जाती थी तो वे मात्र अक्षर ज्ञान प्राप्त करने वाली अल्प आयु की छात्रायें होती थी। [1] यद्यपि उपासरों में जैन साध्वियां उच्च ज्ञान प्राप्त करती एवं पुस्तकों की रचनायें करती थीं। उनके पास अनेक जैन महिलायें उपदेश सुनने जाया करती थीं। [2]

स्त्रियों की शिक्षा के लिये कोई पृथक शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था नहीं थी जहां कि वे नियमित रूप से जाकर ज्ञानार्जन कर सके। अधिकांशः देशी शिक्षा व्यवस्था में स्त्रियों की शिक्षा के लिये घर पर ही व्यवस्था करने का प्रचलन था अतः शिक्षा अधिकारी एवं शिक्षक घर पर ही कन्या विद्यार्थियों को अध्ययन कराते थे। [3]

स्त्री शिक्षा का पाठ्यक्रम सीमित एवं परम्परागत स्वरूप लिये हुए था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक सांस्कृतिक एवं जीवन उपयोगी संन–साधनों से परिचय कराना था। उक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता था, [4] तथा राज्य के इतिहास से सम्बन्धित अनेक कथा–कहानियों की पुस्तकें पढ़ी जाती थी। [5] इसके अतिरिक्त स्त्रियों को उनके अध्ययन अवधि में फलों–फूलों जैवरों–श्रृंगार–प्रसाधन ऋतु–दिन आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की जाती थी। [6] तंत्र–मंत्र एवं शकुन व स्वप्न विद्या जैसी अंधविश्वासी शिक्षा भी पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग थी तो दूसरी ओर मामूली हिसाब–पहाड [7] बारहखड़ी [8] एवं प्राथमिक चिकित्सा से सम्बन्धित अध्ययन स्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम का मुख्य अंग थे।

देशी शिक्षा में प्रचलित इस व्यवस्था का लाभ भी मुख्यतः सम्पन्न परिवार एवं जैन साध्वियां ही प्राप्त करती थी। उपरोक्त व्यवस्था के विशेषकर राजपूत स्त्रियों की शिक्षा से कर्नल टॉड प्रभावित हुआ था, उनके संबंध में उसने लिखा था–'नीचे श्रेणी के सामन्तों' में भी ऐसे बहुत कम है जिनकी लड़कियां पढ़ना और लिखना न जानती हो। यद्यपि वे लिखने का काम बहुत कम करती है.....। परन्तु संसार के सभी कामों के सम्बन्ध में वे बहुत योग्यता रखती है। राजपूत स्त्रियों ने जिनको अपने नाबालिग बालकों को सिंहासनपर बैठने के कारण राज्य का प्रबंध देखना पड़ता है, उन्होंने शासन करने में अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है.....। [9]

स्त्री शिक्षा के लिये विकास के मार्ग को अवरुद्ध करने वाले मुख्य उत्तरदायी कारण तत्कालीन समाज में प्रचलित पर्दा, प्रथा, बाल विवाह एवं हिन्दुओं में वर्ण व्यवस्था के आधार पर स्त्रियों को शुद्ध कहकर उनके ज्ञान के क्षेत्र को सीमित करना था।

मेवाड़ में कालक्रम की विभिन्न परिस्थितियों ने स्त्री शिक्षा को दयनीय अवस्था में पहुंचा दिया था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से स्त्रियों को शिक्षा के क्षेत्र में पुर्नव्यवस्था स्थापित करने के प्रयत्न प्रारम्भ किये गये। 1863 ई. उदयपुर में प्रथम राजकीय विद्यालय की स्थापना के समय से ही पोलिटिकल एजेन्ट मेजर निवन ने उक्त विद्यालय के समान ही एक कन्या विद्यालय की स्थापना के लिये महाराणा को परामर्श दिया। [10] किन्तु प्रारम्भ में महाराणा शम्भूसिंह इस परामर्श को मात्र नैतिक समर्थन ही देते रहे, किन्तु पोलिटिकल एजेन्ट मेजर निक्सन के निरन्तर परामर्श से बाध्य होकर 1866 ई. में राजकीय विद्यालय के साथ ही कन्याओं के अध्यापन हेतु भी कक्षाओं के संचालन की

व्यवस्था की गयी। [11] उक्त विद्यालय राजपूताना में प्रथम राजकीय कन्या विद्यालय था। कन्या विद्यालय के प्रथम सत्र में ही 51 छात्राओं की उपस्थिति थी जो कि प्रथम सत्र की दृष्टि से अत्यन्त उत्साहवर्धक थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ग्र.स. 145, रा.प्र.प्र.उ.
2. ग्र.स. 4012, 3962, रा.प्र.प्र.उ.
3. ग्र.सं. 1874, 434, 82, 2675, 1785, रा.प्रा.प्र.उ.
4. रा.प्रा.प्र.उ. में प्राप्त पुस्तकों के आधार पर
5. ग्र.सं. 184, 188, 179, रा.प्रा.प्र.उ.
6. ग्र.सं. 685, 135, 655, रा.प्रा.प्र.उ.
7. ग्र.सं. 2469 रा.प्रा.प्र.उ.
8. ग्र.सं. 174, रा.प्रा.प्र.उ.
9. कर्नल जेम्स टॉड–एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ मेवाड़, पृ. 337
10. (क) फो. एण्ड पो. पोलिटिकल नौ. 138–39, पृ. 72, दिसम्बर 1865, रा.अ.दि.
    (ख) फो. एण्ड पो. जनरल नौ–71–73, पृ. 4, जनवरी, 1866, रा.अ.दि.
11. (क) एरिस्कीन, के.डी.–मेवाड़ रेजिडेन्सी वो–प्प, पृ. 82, 1907
    (ख) याट, सी.ई.–गजेटियर ऑफ मेवाड़, वो–पृ. 51, 1880
    (ग) मेवाड़ एजेन्सी रिपोर्ट, पृ. 16, 1867